अनुवाद और सांस्कृतिक समझ

कोमल किथन पाटिल

के.एल.एस. गोगटे कॉलेज ऑफ कॉमर्स, बेलगावी।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18330968

ABSTRACT:

इस शोध पत्र में अनुवाद की परिभाषा, अनुवाद के प्रकार, विविध क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व, संस्कृति की परिभाषा, महत्व तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अनुवाद की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

KEYWORDS:

अनुवाद, सांस्कृतिक समझ, राष्ट्रीय एकता, अनुवाद के प्रकार, रोजगार.

आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व और उपादेयता को विश्व भर में स्वीकारा जा चुका है। "वैदिक युग" में 'पुनः कथन' से लेकर आज 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी और बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में "स्वांतः सुखाय" माना जाने वाला अनुवाद, कर्म के बल पर आज "संगठित व्यवस्था" का मुख्य आधार बन गया है। दूसरे शब्दों में, अनुवाद आज "व्यक्ति परिधि" से निकलकर आधुनिक युग की "समष्टि परिधि" में समा गया है। आज विश्व भर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है, इसलिए हर तरह से अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

भारत में अनुवाद की "परंपरा पुरानी" है, किंतु अनुवाद को जो महत्व "21वीं सदी" के उत्तरार्ध में प्राप्त हुआ, वह पहले नहीं हुआ था। आज विश्व के अधिकांश बड़े देशों में एक प्रमुख भाषा के साथ-साथ अन्य कई भाषाएँ भी "गौण" भाषा के रूप में समानांतर चल रही हैं। हमारे देश में अनुवाद का महत्व ध्यान में रखते हुए, यह एक सामाजिक आवश्यकता बन गई है। आज के सिमटते हुए संसार में संप्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी निश्चित "योगदान" दे रहा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वतंत्र सिद्ध हुई है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है। इससे विश्व मैत्री को सत्तारूढ़

बना सकते हैं। वर्तमान युग में अनुवाद का क्षेत्र बड़ा व्यापक और निरंतर हो रहा है।

शब्द व्युत्पत्ति:

अनुवाद शब्द संस्कृत की "वद" धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बनता है। 'वद' का अर्थ होता है बोलना या कहना। 'अनु' उपसर्ग जोड़ने से, 'कही गई बात को फिर से कहने' की क्रिया होती है। अनुवाद शब्द का प्रयोग पुराने समय से होता आया है। शिष्य द्वारा गुरु की बात को "दोहराए" जाने की क्रिया, पुनः कथन या समर्थन के लिए "आवृत्ति" जैसे संदर्भ में इसका प्रयोग किया गया है। अनुवाद का प्रयोग पहली बार "मोनियर विलियम्स" ने अंग्रेजी शब्द "ट्रांसलेशन" के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही अनुवाद शब्द हिंदी में आ गया। इस तरह आज अनुवाद क्षेत्र व्यापक तथा महत्वपूर्ण हो गया है।

आज अनुवाद विश्वव्यापी स्तर पर विभिन्न अनुशासनों, विविध ज्ञान शाखाओं और भाषाई संरचना चेतना का विस्तार प्रदान करने का संसाधन बन गया है। एक ओर इसका महत्व ललित तथा सृजनात्मक साहित्य की प्रस्तुति में है, तो दूसरी ओर भौतिक, तकनीकी, वैज्ञानिक, औद्योगिक आदि शब्दावलियों के लिए भावुकता रहित अनुवाद के निर्माण और कार्यालयी पत्र व्यवहार के लिए भी हो रहा है। साहित्यिक सूचना फलक, साहित्य, दूरदर्शन तथा संचार माध्यमों में अनुवाद ने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। अनुवाद वस्तुतः जटिल भाषिक प्रक्रिया का परिणाम है। अनुवाद प्रक्रिया बहु-स्तरीय है। इसका एक स्तर विज्ञान की तरह विश्लेषणात्मक है, जो क्रमबद्ध विवेचना की अपेक्षा रखता है।

प्रयोजनमूलक हिंदी के साथ-साथ वर्तमान में अत्यंत प्रभावशाली माध्यम के रूप में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज दुनिया में विश्व स्तर पर तेजी से ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनेक विविध क्षेत्रों में विकास का फैलाव समस्त जगत में तीव्र गति से हो रहा है। उक्त सभी क्षेत्रों में देश-विदेश की संस्कृति तथा देश के प्रशासन आदि को यथाशीघ्र समुचित ढंग से अभिव्यक्त करने में एक सहायक अनिवार्य तत्व के रूप में अनुवाद का महत्व स्वयं सिद्ध हो गया है। अनुवाद के उद्देश्य हैं- एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा के साहित्य से अनुवाद के रूप में समृद्ध करना तथा दूसरी भाषा की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तत्व, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति करना।

अनुवाद के प्रकार:

मुख्यतः अनुवाद के तीन प्रकार हैं:

1. शब्दानुवाद: इसमें मूल भाषा के वाक्यों का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। मूल भाषा की शब्द योजना और वाक्य विन्यास को यथावत अनुवाद की भाषा में रखा जाता है।
2. भावानुवाद: शब्दानुवाद की तुलना में भावानुवाद पाठक को अधिक समझ में आ जाता है। इसमें वाक्य को भाषागत नजर पर न रखकर भाव के आधार पर अनुवाद किया जाता है।
3. रूपांतरण अनुवाद: इसे गद्यांश/पद्य अनुवाद भी कहते हैं। इसमें अनुवादक को पूरी स्वतंत्रता होती है। वह मूल पाठ के उद्देश्य अथवा विचार से दूर नहीं जाता है, बल्कि उसमें नई ऊर्जा और चेतना भर देता है। वह साहित्य की विभिन्न विधाओं का अनुवाद करने की क्षमता रखता है, चाहे वह कविता हो, कहानी हो, उपन्यास हो या नाटक हो।

अनुवाद की परिभाषाएँ:

1. शब्दार्थ चिंतामणि के अनुसार: “प्राप्तस्य पुनः कथने” अर्थात पहले कहे गए को फिर से कहना (वैदिक युग में इसे पुनः कथन करना कहते हैं)।
2. भार्गव हिंदी शब्दकोश के अनुसार: “अनुवाद का अर्थ है पुनरुल्लेख, दोहराव, अनुकरण या भाषांतर।”
3. देवेंद्र नाथ शर्मा के अनुसार: “विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद है।”
4. भोलानाथ तिवारी के अनुसार: “किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषांतर करना अनुवाद है।”
5. जैनेंद्र कुमार के अनुसार: “अनुवाद का मतलब है किसी बात को एक से दूसरी भाषा में उतारकर कहना। आवश्यक है कि वह बात दूसरी भाषा वालों के पास पहुंच जाए, बात का भाव सही-सही पहुंचे और बीच में कहीं वह अपना प्रभाव न खोये।”
6. न्यूमार्क (Newmark) के अनुसार: “अनुवाद एक शिल्प है जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।”

अनुवाद का महत्व और क्षेत्र:

अनुवाद साहित्य के आधार पर, विषय वस्तु के आधार पर और उसकी प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए- शब्दानुवाद। विषय वस्तु के आधार पर- सरलानुवाद, यांत्रिक अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद, कार्यालयी अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद, वैज्ञानिक-तकनीकी अनुवाद आदि।

अनुवाद भाषागत विविधता में एकता का सूत्र स्थापित करता है। यह एक भाषा में लेखबद्ध विचारों और भावों को अन्य भाषा में सुलभ करता है। अनुवाद शब्द संस्कृत में 'वद' धातु से बना है, जिसका तात्पर्य रूपांतर करना, बोलना या बात करना होता है। वास्तव में यह सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों को जानने-समझने के लिए अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। भाषा के विकास में और साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का बड़ा योगदान है। अनुवाद ने प्राचीन काल से विभिन्न साहित्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनेक विद्वानों के मतानुसार विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के लिए विभिन्न शब्द हैं, जैसे मराठी में 'भाषांतर' कहते हैं, अंग्रेजी में 'ट्रांसलेशन' होता है।

अनुवाद की उपयोगिता:

1. रचनात्मक कला संवर्धन हेतु उपयोगी है। (उदा. "विंग्स ऑफ फायर", "अग्नि पथ" - अब्दुल कलाम की किताब)।
2. विदेशी एवं विभिन्न भाषाओं के साहित्य से लाभान्वित होने के लिए अनुवाद का महत्व है। (उदा. "आंबेडकर जी का आत्मचरित" मराठी भाषा से अनुवादित है)।
3. विज्ञान, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, खगोल शास्त्र आदि के ज्ञानार्जन हेतु आवश्यक है।
4. विविध संस्कृतियों को जानने के लिए अनुवाद आवश्यक है। (उदा. कृष्णा सोबती का "जिंदगीनामा", जिसमें पंजाब की संस्कृति का चित्रण दूसरी भाषा में लाभार्थ हो रहा है)।
5. अंतरराष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण है।
6. विविधता में एकता स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
7. सांस्कृतिक समृद्धि एवं प्रसार हेतु अनुवाद का महत्व है।
8. बहुमुखी प्रगति में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है।
9. पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने, शब्दकोश बनाने तथा भाषा

कौशल विकास के लिए अनुवाद आवश्यक है।

10. वाणिज्यिक क्षेत्र में, बैंक से संबंधित पत्राचार के लिए और व्यावसायिक दृष्टिकोण से अनुवाद महत्वपूर्ण है।

इस तरह विश्व संस्कृति, बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का श्रेय अनुवादक को जाता है, इसलिए राष्ट्रीय एकता के लिए अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। अनुवाद संचार हेतु महत्वपूर्ण है। आज हम अनुवादित फिल्में देखकर दूसरी संस्कृतियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। 190 राष्ट्रों के खिलाड़ी किस प्रकार विभिन्न भाषी होने के बावजूद नियमों का पालन करते हुए विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में भाग ले रहे हैं, इसमें निश्चय ही अनुवाद का महत्व परिलक्षित होता है।

धर्म प्रचार-प्रसार के लिए भी अनुवाद का उपयोग किया जाता है। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अफगानिस्तान, यूनान, सीरिया, चीन, जापान, श्रीलंका आदि अन्य राष्ट्रों में भी बौद्ध धर्म का प्रचार कार्य अनुवाद के तौर पर ही जारी रहा।

औद्योगिक स्तर पर पारस्परिक भाषिक विनिमय को बढ़ावा मिल रहा है और इस विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाने लगा है। आज वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। यदि हमें दूसरे प्रगतिशील राष्ट्रों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है, तो हमें वहाँ के ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी करने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय एकता में अनुवाद की आवश्यकता:

भारत राष्ट्र 'विविधता में एकता' का प्रतीक है। यहाँ विभिन्न जातियां, विभिन्न संप्रदायों एवं विभिन्न विश्वासों के भावात्मक स्तर पर राष्ट्रीय एकता कही जाती है। मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन से लेकर आज के प्रगतिशील आंदोलन तक भारतीय साहित्य की दशा और दिशा एक रही है, यह बात अनुवाद के द्वारा ही संभव हो सकी है। जिस समय तुलसीदास 'रामचरितमानस' महाकाव्य लिख रहे थे, समानांतर उड़िया में बलराम दास, बंगाल में कृत्तिवास, तेलुगु में पोतना, तमिल में कंबन तथा हरियाणवी में अहमद बख्श अपने-अपने साहित्य में रामचरित्र को नया रूप दे रहे थे।

संस्कृति के विकास में अनुवाद की आवश्यकता:

दुनिया के जिन देशों में विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों का मिलन हुआ है, वहां सामासिक संस्कृति के निर्माण में अनुवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन काल में रोमन लोगों का यूनानियों (Greeks) से संपर्क हुआ, जिसके फलस्वरूप ग्रीक से लैटिन में अनुवाद हुआ। इसी प्रकार 12वीं शताब्दी में स्पेनिश लोग इस्लाम के संपर्क में आ गए और बड़े पैमाने पर यूरोपियन भाषाओं में अरबी का अनुवाद प्राप्त हुआ।

रोजगार के रूप में अनुवाद की आवश्यकता:

वर्तमान युग में अनुवाद ज्ञान की ऐसी शाखा के रूप में विकसित हुआ है जहां इज्जत-शोहरत है। आज अनुवादक दूसरे दर्जे का साहित्यकार नहीं, बल्कि उसकी अपनी मौलिक पहचान है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हुए विकास के साथ भारतीय परिदृश्य में कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अभियांत्रिकी और व्यापार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का 'भारतीयकरण' कर उन्हें 'जन-सुलभ' (लोकोन्मुख) करने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। 20वीं शताब्दी का उत्तरार्ध रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद को महत्वपूर्ण पद पर आसीन हुआ देखता है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात केंद्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थाओं और प्रतिष्ठानों में 'राजभाषा विभाग' की स्थापना हुई, जहां अनुवाद कार्य में प्रशिक्षित हिंदी अनुवादक एवं हिंदी अधिकारी कार्य करते हैं। आज रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद सबसे आगे है; प्रति सप्ताह अनुवाद संबंधी जितने पद विज्ञापित होते हैं, उतने अन्य किसी क्षेत्र में नहीं।

नव्यतम विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता:

औद्योगीकरण एवं जनसंचार के माध्यमों में हुए अत्यधिक विकास ने विश्व की दिशा ही बदल दी है। नई खोज, नई तकनीकी- इसमें भी अनुवाद महत्वपूर्ण माना जाता है। आज हम अनुवादित फिल्में देखकर दूसरी संस्कृति के बारे में, इतिहास के बारे में, राजनीति के बारे में, धर्म, जात-पांत, संप्रदाय आदि का ज्ञान अनुवाद के द्वारा ही संभव कर सके हैं। संवाहक के रूप में अनुवाद देश-विदेश में नवीन ज्ञान-विज्ञान, शोध और चिंतन को दुनिया के हर कोने तक पहुँचाने का काम करता है।

अनुवाद करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ:

1. अनुवादक को व्याकरण का समुचित ज्ञान होना चाहिए।

2. अनुवाद करते समय क्लिष्ट (कठिन) शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
3. अंग्रेजी में प्रचलित शब्दों का प्रयोग सहजता से कर सकते हैं, जैसे- डायरी, फिल्म, बैंक, मिनट, स्टेशन आदि।
4. मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद शाब्दिक न होकर भाषा के अनुरूप होना चाहिए (जैसे- 'मौसेरा भाई', 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' आदि)।
5. अनुवाद की भाषा सरल, स्वाभाविक और शुद्ध होनी चाहिए।
6. विभिन्न भाषाओं का समुचित ज्ञान होना आवश्यक है ताकि मूल अर्थ और भाव में परिवर्तन न हो; इस बात के प्रति सजग रहना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा
3. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.